14/09/2016--"स्त्री लेखन में चुनौतियाँ" (सेमिनार)

पराग के तत्वाधान में हिन्दी सप्ताह 2016 का शुभारंभ हुआ सेमिनार 'स्त्री लेखन में चुनौतियों' के साथ। इस कार्यक्रम में देश की जानी मानी प्रबुद्ध स्त्री लेखकों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई हिन्दी की प्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध महिला आलोचक रोहिणी अग्रवाल, सुप्रसिद्ध कथाकार और पत्रकार गीता श्री और स्त्रियों और दलितों के लिए काम करने वाली समाजसेवी अनिता भारती ने। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई अपने महत्कावपूर्ण वक्तव्य से जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ स्वाति पाल ने। कार्यक्रम का समां बांधा पराग की संयोजक डॉ सुधा उपाध्याय ने।

रोहिणी अग्रवाल (सुप्रसिद्ध आलोचक)

सुधा उपाध्याय जी के सौजन्य से हिंदी दिवस पर जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज में जाना हुआ. ऊर्जा से भरपूर मेजबान और उतने ही उत्साह से दमकते मेहमान! खुल कर बात हुई स्त्री के समक्ष आने वाली चुनौतियों पर - मंच से भी और आपसी गुफ्तगू में भी. सच, स्त्रियां जब मिल-बैठती हैं तो एक-दूसरे के भीतर दिल तक उतर जाती हैं.

गीता श्री (सुप्रसिद्ध कथाकार, पत्रकार)

"स्त्री लेखन में चुनौतियाँ"

यही तो विषय था बहस का. इस पर जानकीदेवी मेमोरियल कॉलेज , दिल्ली की प्रिंसिपल स्वाति पाल का बीज वक्तव्य सुन कर हम तो चकित. कुछ छोड़ा ही नहीं उन्होंने हम तीन वक्ताओं के लिए. सारे बिंदुओं को छुआ और उसकी जमकर व्याख्या की. उनके बाद हमारे लिए पर्सनल अनुभव बताने के अलावा कुछ नहीं बचा. मैं अपनी प्रिय वक़्ता रोहिणी अग्रवाल और अनिता भारती जी को सुनने के लिए व्यग्र थी. अनिता जी ने व्यवहारिक बातें की और लड़कियों को लेखन की चुनौतियों का सामना कैसे करें, इस पर अपने अनुभवों के माध्यम से समझाया. उनको सुनते हुए , अहसास हुआ कि अनिता का कभी एकल व्याख्यान इसी विषय पर होना चाहिए.
रोहिणी अग्रवाल जी को सुनना किसी उपयोगी किताब का पाठ करने जैसा जिसमें जीवन का सारा सत्य दबा हो. एक स्त्री के पैदा होने से लेकर उसके अंत तक की यात्रा कम समय में रोहिणी ही करा सकती हैं. लेखक से पहले एक स्त्री की चुनौतियों को हम झेलते हैं. फिर लेखन का दौर शुरु होता है. बचपन की कुछ घटनाएँ स्त्री को कैसे बदल देती हैं, उसके मन पर कैसा असर डालती हैं और वह उन्हीं अनुभवों को ढोए ढोए बड़ी होती है...! रोहिणी जी ने समाज की मानसिकता पर प्रहार करती हुई लेखन तक आईं.
इन दोनों प्रखर वक्ताओं के बाद मेरी बारी. मैं बोलूँ क्या ? सारी तैयारी धरी रह गई. ख़ूब तैयार होकर गई

थी, ये बोलूँगी, वो बोलूँगी...मार डालूँगी, काट डालूँगी टाइप मूड में. पर जो मैं कहना चाहती थी वो बहुत कुछ स्वाति जी कह गई थीं. मैंने अपने प्वाइंटस छोड़ दिए.
मेरी तो लाइन वही कि "पढ़िए गीता, बनिए सीता...भर भर भात पकाइए...!" सहाय जी कह ही गए हैं.
लिखेगी तो ढीठ कहलाएगी न !
कोई औरत कलम उठाए
इतना दीठ जीव कहलाए
उसकी गलती सुधर न पाए
उसके तो लेखे तो बस ये है
पहने-ओढे, नाचे गाए...”
----(वर्जिनिया वुल्फ)
मैंने भी अब तक के अपने अनुभवों (साहित्य जगत) का पिटारा खोला और बताया कि कैसे मेरे ऊपर

"धार्मिक कहानियाँ" लिखने का आरोप लगा और मोरल पुलिस कैसे सक्रिय हो गई. 😆
कवि-लेखक सुधा उपाध्याय ऊर्जा का अक्षयवट है. छलछलाती रहती है ऊर्जा . फुलझड़ी-सी स्पार्क वाली सुधा ने संचालन से समा बाँध दिया.
प्रो. संध्या गर्ग जी का धन्यवाद ज्ञापन हमें विशिष्टता-बोध से भर गया.
और सभागार में बैठी लड़कियाँ ! जैसे मेरे असंख्य क्लोन ! क्या मजाल कि हॉल से उठकर कोई बाहर जाए. डटी रहीं अंत तक. उनकी तालियों की गूँज अभी तक सुनाई दे रही है. उनकी जिज्ञासु आँखें याद आ रहीं हैं. ये लड़कियाँ सही गाइडेंस में हैं. बदल देंगी दुनिया का चेहरा. लिखेंगी वो सब जो उनका दिल कहेगा ।
क्योंकि वे है। बेमिसाल, बेफ़िकर और बेख़ौफ़ !!
शुक्रिया सुधा मुझे इतनी प्यारी लड़कियों के बीच बोलने का मौक़ा दिया. मेरा दिल हल्का हो गया. बहुत ग़ुबार था.

15/09/2016

स्वरचित कविता प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय के अलग-अलग कॉलेज से भारी संख्या में छात्रों ने भागीदारी की। प्रतिभागियों ने जोरदार कविताएं सुनाई। इस कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में शामिल थे रेडियो टेलीवीजन और मंच के जाने माने कवि और कलाकार चिराग़ जैन साथ में डा संध्या गर्ग और डॉ सुधा उपाध्याय।

16/09/2016

हिन्दी सप्ताह के दौरान आज सद्य अभिनय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बड़ी बात रही प्रतियोगियों की महत्वपूर्ण भागीदारी। प्रतियोगियों ने अपने-अपने अंदाज में इस प्रतियोगिता को काफी रोचक बना दिया। निर्णायक के तौर पर बरेली से आई निरुपमा अग्रवाल जी ने प्रतियोगियों की खूबियों और खामियों के साथ उनका सही विश्लेषण किया।

17/09/2016

लोकगीत गायन प्रतियोगिता ने सबका मन मोह लिया। अलग-अलग कॉलेज से आए प्रतिभागियों ने सुरीली आवाज़ में दिल खोलकर लोकगीत का गायन किया। इस कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में शामिल सुप्रसिद्ध दोहाकार और कवि नरेश शांडिल्य, सुप्रसिद्ध लोकगीत गायक संजय प्रभाकर और डॉ कल्पना भोला थीं। कार्यक्रम के दौरान और अंत में तीनों निर्णायकों ने लोकगीत गाकर सबका दिल जीत लिया।

नरेश शांडिल्य (सदस्य निर्णायक मंडल, लोकगीत प्रतियोगिता)

आज (17.09.2016) दिल्ली विश्वविद्यालय के जानकी देवी महाविद्यालय में वहाँ की पराग संस्था द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय लोकगीत प्रतियोगिता में मुझे एक निर्णायक के तौर पर शामिल होने का अवसर मिला। अन्य दो निर्णायक थे डॉ. कल्पना भोला और प्रसिद्ध गायक संजय प्रभाकर।
प्रतियोगिता में 22 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता का कुशल आयोजन जानकी देवी महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ. सुधा उपाध्याय के नेतृत्व में पराग संस्था की छात्राओं ने किया।

संजय प्रभाकर ((सदस्य निर्णायक मंडल, लोकगीत प्रतियोगिता)

करोलबाग स्तिथ जानकीदेवी महिला कॉलेज (दि. वि.) में 17 सितं. को डॉ. सुधा उपाध्यायजी के सफल संयोजन में आयोजित अन्तरमहाविद्यालयी लोकगीत गायन प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल (जज) का सदस्य बनने का सुअवसर मिला। प्रख्यात कवि श्री नरेश शांडिल्य और इसी कॉलेज की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. कल्पना भोलाजी भी निर्णायक थीं। 21 छात्राओं ने विभिन्न भाषाओं में लोकगीत गाये। हम तीनों निर्णायकों ने भी हरियाणवी, संताली और पंजाबी लोकगीत गाये। इस प्रकार हमने विश्वकर्मा दिवस और मोदी का जनमदिवस गाते-बजाते, आनंदपूर्वक मनाया।

17/09/2016

पराग के तहत आयोजित प्रेमचंद कहानी प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय के 40 अलग-अलग कॉलेज के प्रतिभागियों ने स्व-रचित कहानियां भेजी। प्रेमचंद कहानी प्रतियोगिता दिल्ली विश्वविद्यालय

में अपने तरह की अकेली ऐसी प्रतियोगिता है जिसमें इतनी प्रवृष्टियां शामिल की जाती हैं। छात्रों की लिखी कहानियों को मशहूर कहानीकारों के पास भेजी जाती हैं और उसके बाद इसका निर्णय सुनाया जाता है।